निनाद ललित कला समिति छिन्दवाडा

अध्यक्ष–आनंद बक्षी

नवदुनिया

ग़ज़ल–ग़ज़ल नहीं रही

छिंदवाड़ा (ब्यूरो)। पुरानी गजलें शास्त्रीय रागों पर आधारित हुआ करती थीं अब गजलों में वो बात नहीं होती है। शायर और गजल गायक अपनी शायरी में इश्क की बात खुदा से करते थे। नए दौर की गजलें स्त्री प्रधान हो गई हैं। बेगम अख्तर और मेहंदी हसन को छोड़ दें तो और कोई गजल गायक गजल की गंभीरता पर ध्यान ही नहीं देता है। ये दोनों

■ पत्रकारों से मुखातिब हुए अश्विनी कुमार

गायक गजल को रागों से बांधते हुए उसे विस्तार दिया करते थे। यह बात गजल गायक अश्विनी कुमार ने कही। वे छिंदवाड़ा में आयोजित निनाद ललित कला द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम के लिए आए हुए हैं। उन्होंने पत्रकारों से रूबरू होते हुए कहा कि गजलों में अब इबादत और बंदगी नहीं होती है। आज की गजल -गजल न होकर गीत हो गई है। गजलों से उर्दू के अलफाज जाने लगे हैं। गजलों में अपनी बात कहने की ताकत होती है। यह न कभी मरी है और न मरेगी।

10 हजार ग़ज़लों का है खजाना

भिलाई से आए हुए इस गायक ने कहा कि उनके पास 10 हजार गजलों का खजाना है। सभी गजलें 175 वर्ष पुरानी है। वे खानदान की तीसरी पीढ़ी हैं जो गजल गा रहे हैं। उन्होंने कहा कि उन्हें खुशी है कि पुरानी गजलों का दौर फिर से आ रहा है। नई पीढ़ी को इस ओर ध्यान देना चाहिए कि वे गजल का असली मतलब समझे और फूहड़पन से बचें। गजलों को मर्यादाओं और जिंदगी के साथ जोड़े, इसे व्यवसाय न बनाएं।

जबलपुर जनपक्ष

ग़ज़ल–ग़ज़ल नहीं रही

छिन्दवाड़ा28जनवरी(जनपक्ष) पुरानी गजलें शास्त्रीय रागों पर आधारित हुआ करती थी अब गजलों में वो बात नहीं होती हैं। शायर और गजल गायक अपनी शायरी में इश्क की बात खुदा से करते थे। नए दौर की गजले स्त्री प्रधान हो गई हैं। बेगम अख्तर और मेंहदी हसन को छोड़ दें तो और कोई गजल गायक गजल की गंभीरता पर ध्यान ही नहीं देता हैं। ये दोनों गायक गजल को रागों से बांधते हुए उसे विस्तार दिया करते थे। यह बात गजल गायक अश्विनी कुमार ने कही। वे छिंदवाड़ा में आयोजित निनाद ललित कला द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम के लिए आए हुए हैं। उन्होंने पत्रकारों से रूबरू होते हुए कहा कि गजलों में अब इबादत और बंदगी नहीं होती हैं। आज की गजल-गजल न होकर गीत हो गई हैं। गजलों से उर्दू से अलफाज जाने लगे हैं। गजलों में अपनी बात कहने की ताकत होती हैं। यह न कभी मरी हैं और न